❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इन्द्रो विश्वस्य राजति।

सामवेद 456

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर सारे विश्व का शासक और संचालक है।

The Bounteous Lord is the monarch and the motivation of the whole world.

वर्ष 40, अंक 2 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 7 नवम्बर, 2016 से रविवार 13 नवम्बर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में 133वां महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाणोत्सव सम्पन्न

संस्कृति और संस्कृत की सुरक्षा के लिए आर्य समाज का विस्तार अत्यावश्यक है

– महाशय धर्मपाल, प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 133वां निर्वाणोत्सव दिनांक 30 अक्टूबर 2016 को रामलीला मैदान में हर्षोल्लास के साथ शांतिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्त्व में यज्ञ से हुआ जिसमें मुख्य यजमान श्रीमती मंजू जी एवं श्री अशोक गुप्ता, श्रीमती मंजू जी एवं श्री राकेश आर्य, श्रीमती प्रियंका जी एवं श्री कपिल बंसल, डॉ. पुष्पलता वर्मा जी एवं श्री जे. बी. सिंह थे। यज्ञ संयोजक श्री मदनमोहन सलूजा जी थे। यज्ञोपरान्त ध्वजारोहण श्री बलदेव राज सेठ (सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाज सेवी), महाशय धर्मपाल (चेयरमैन एम.डी.एच. ग्रुप), स्वामी प्रणवानन्दजी, श्री सुरेन्द्र रैली एवं अन्य पदाधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। ध्वजगान आर्यवीर दल के प्रधान शिक्षक श्री दिनेश आर्य एवं आर्यवीरों ने प्रस्तुत किया।

– शेष पृष्ठ 4 पर

महर्षि दयानन्द सत्य के शोधक थे और सत्य पर ही शहीद हो गए – डॉ. महेश विद्यालंकार

133वें निर्वाण दिवस के अवसर पर आर्यजनों को सम्बोधित करते वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार जी, मंचस्थ अतिथिगण एवं आर्यजनों से भरा पण्डाल

भारत भर में फैले स्मॉग का वैदिक उपचार केवल मात्र वैदिक यज्ञ ही है

वर्ष 2007 में डॉ. ट्रेले द्वारा यज्ञ पर किए गए वैज्ञानिक अनुसन्धान पर आधारित एक रिपोर्ट

यह रिपोर्ट एथ्नोफार्माकोलोजी के शोध पत्र (Resarch Journal of Ethno pharmacology 2007) में दिसंबर 2007 में छपी थी। रिपोर्ट के आधार फ्रांस के ट्रेले नामक वैज्ञानिक ने हवन पर रिसर्च की- जिसमें उन्हें पता चला कि हवन मुख्यत: आम की लकड़ी से किया जाता है। जब आम की लकड़ी जलती है तो फॉर्मिक एल्डिहाइड नामक गैस उत्पन्न होती है जो कि खतरनाक बैक्टीरिया और जीवाणुओं को मारती है तथा वातावरण को शुद्ध करती है। इस रिसर्च के बाद ही वैज्ञानिकों को इस गैस और इसे बनाने का तरीका पता चला। गुड़ के जलने पर भी यह गैस उत्पन्न होती है।

(2) टौटीक नामक वैज्ञानिक ने हवन पर की गयी अपनी रिसर्च में पाया कि यदि आधे घंटे हवन में बैठा जाये अथवा हवन के धुएं से शरीर का सम्पर्क हो तो टाइफाइड जैसे खतरनाक रोग फैलाने वाले जीवाणु भी मर जाते हैं और शरीर शुद्ध हो जाता है।

(3) हवन की महत्ता देखते हुए राष्ट्रीय वनस्पति अनुसन्धान संस्थान लखनऊ के वैज्ञानिकों ने भी इस पर एक रिसर्च की कि क्या वाकई हवन से वातावरण शुद्ध होता है और जीवाणु नाश होता है अथवा नहीं। उन्होंने ग्रंथों में वर्णित हवन सामग्री जुटाई और जलाने पर पाया कि यह विषाणु नाश करती है। फिर उन्होंने विभिन्न प्रकार के धुएं पर भी काम किया और देखा कि सिर्फ आम की लकड़ी 1 किलो जलने से हवा में मौजूद विषाणु बहुत कम नहीं हुए पर जैसे ही उसके ऊपर आधा किलो हवन सामग्री डाल कर जलायी गयी तो एक घंटे के भीतर ही कक्ष में मौजूद बैक्टीरिया का स्तर 94 प्रतिशत कम हो गया।

– शेष पृष्ठ 4 पर

वैदिक संस्कृति में यज्ञ का अपना विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। अनादिकाल से यज्ञ की महिमा बखान हमारे शास्त्रों में विद्यमान है। वैदिक संस्कृति में व्यक्ति के जन्म से भी पूर्व गर्भाधान लेकर मृत्यु तक 16 संस्कारों का विधान है उनका आधार यज्ञ ही है।

..........आम की लकड़ी 1 किलो जलने से हवा में मौजूद विषाणु बहुत कम नहीं हुए पर जैसे ही उसके ऊपर आधा किलो हवन सामग्री डाल कर जलायी गयी एक घंटे के भीतर ही कक्ष में मौजूद बैक्टीरिया का स्तर 94 प्रतिशित कम हो गया। यही नहीं उन्होंने आगे भी कक्ष की हवा में मौजूद जीवाणुओं का परीक्षण किया और पाया कि कक्ष के दरवाजे खोले जाने और सारा धुआं निकल जाने के 24 घण्टे बाद भी जीवाणुओं का स्तर सामान्य से 96 प्रतिशत कम था।.........

वेद-स्वाध्याय

वह एक है !

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।। –ऋ. 1/164/46
ऋषिः **दीर्घतमाः।।** देवताः **सूर्यः।।** छन्दः **निचृत्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ – विप्राः=ज्ञानी पुरुष **एकं सत्**= एक ही होते हुए को **बहुधा वदन्ति**= अनेक प्रकार से बोलते हैं। उस एक ही को **इन्द्रं, मित्रं, वरुणं, अग्निं आहुः**= इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि कहते हैं। **अथो सः दिव्यः सुपर्णः गरुत्मान्**=और वही दिव्य, सुपर्ण, गरुत्मान् कहलाता है **अग्निं यमं मातरिश्वानं आहुः**= उस एक ही को अग्नि, यम और मातरिश्वा कहते हैं।

विनय – हे मनुष्यो! इस संसार में एक ही परमात्मा है। हम सब मनुष्यों का एक ही प्रभु है। हम चाहे किसी सम्प्रदाय, किसी पन्थ, किसी मत के माननेवाले हों, परन्तु संसार भर के हम सब मनुष्यों का एक ही ईश्वर है। भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न सम्प्रदायवाले उसे भिन्न-भिन्न नाम से पुकारते हैं, परन्तु वह तो एक ही है। जो जिस देश में व जिस सम्प्रदाय के वायुमण्डल में रहा है, वह वहाँ के प्रचलित प्रभु नाम से उसे पुकारता है। कोई 'राम' कहता है, कोई 'शिव' कहता है, कोई 'अल्लाह' कहता है, कोई 'लॉर्ड' कहता है। 'विप्रों' ने, ज्ञानी पुरुषों ने, उस प्रभु को जिस रूप में देखा, उसके जिस गुणोत्कर्ष का उन्हें अनुभव हुआ, अपनी भाषा में उसी के वाचक शब्द से उसे वे पुकारने लगे। उन विप्रों द्वारा वही नाम उस समाज व सम्प्रदाय में फैल गया। कोई विप्र गुरु से ग्रहण करके उसे 'ओं' या 'नारायण' नाम से पुकारता है, तो कोई अपने महात्माओं और सद्ग्रन्थों से पाकर उसे 'खुदा' या 'रहीम' कहता है, परन्तु वह प्रभु एक ही है।

हम साम्प्रदायिक लोगों ने संसार में बड़े-बड़े उपद्रव किये हैं और आश्चर्य यह कि ये सब लड़ाई-दंगे अपने प्रभु के नाम पर हुए! वैष्णवों और शैवों के झगड़े हुए हैं, हिन्दू और मुसलमानों में रक्तपात हुए हैं, यहूदियों और ईसाइयों के युद्ध हुए हैं-यह सब क्यों? यह सब तभी होता है जब हम यह भूल जाते हैं कि ''**एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति**''- वह एक ही है, परन्तु ज्ञानी लोगों ने अपने-अपने अनुभवों के अनुसार उसे भिन्न-भिन्न नाम दिया है। ईश्वर होने से वही 'इन्द्र' है, मृत्यु से त्राता होने से वही 'मित्र' है, पापनिवारक होने से वही 'वरुण' है, प्रकाशक होने से वही 'अग्नि' है। वेदमन्त्रों में इन नाना नामों से पुकारा जाता हुआ भी वह एक है। इसी प्रकार वेदमन्त्रों ने 'दिव्य', 'सुपर्ण' (शोभन पतनवाला) या 'गरुत्मान्' (गुरु आत्मा), 'अग्नि', 'यम' (नियन्ता) और 'मातरिश्वा' (अन्तरिक्ष में श्वसन करनेवाला) आदि भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा, परन्तु अज्ञानियों ने उसे भिन्न-भिन्न नामों से पृथक्-पृथक् समझ लिया और पृथक्-पृथक् कर दिया। वेद की पुकार सुनो-वह एक है! वह एक है! – **एकं सत्!**

– साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

हर दल की अपनी-अपनी लाशें !

देश में कुछ समय पहले तक जन समस्याओं का प्रतिनिधित्व मीडिया किया करती थी और नेता उसके पीछे चलते थे किन्तु आज हालात बदल गये। नेता एजेंडा सेट करते हैं और मीडिया उसके पीछे-पीछे चलती है। हालांकि भारतीय राजनीति का अपना एक गौरव रहा है, अपना इतिहास है। समय-समय पर बड़े-बड़े बदलाव राजनीति में होते आ रहे हैं। विदुर से लेकर चाणक्य तक और शकुनी से लेकर केजरीवाल तक इसी भारतीय राजनीति की देन है। लेकिन वर्तमान समय की राजनीति जनता की मूलभूत जरूरतों, राष्ट्रहित जनहित के बजाय (लाशों) पर आकर टिकी सी दिखाई दे रही है। अभी फेसबुक पर एक पोस्ट पढ़ी जो प्रश्नवाचक चिह्न के साथ थी कि राजनीति में लाशों का क्या मूल्य चल रहा है? पता नहीं व्यंग था या वर्तमान राजनीति पर कटाक्ष! किन्तु भारतवर्ष की राजनीति में लाशों का बढ़ता महत्त्व देखते हुए यह प्रश्न प्रासंगिक जरूर था। यह सत्य है कि पिछले कुछ समय से भारतीय राजनीति लाशों के इर्द-गिर्द ही मंडराती नज़र आ रही है। इसे आप समय का मखौल कहो या जिन्दा राजनीति की मृत संवेदना दोनों ही सूरत में कोई भी अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि कुछ समय से राजनीतिक लोगों ने अपनी विचारध् ाारा बदल ली है। यह कभी तो लाशों को लेकर चिंतित होते हैं तो कभी घोड़े की टांग को लेकर। रोहित वेमुला हो या अखलाक, डॉ. नारंग हो या भिवानी से आत्महत्या करने वाला रामकिशन हो, मतलब हर एक दल की अपनी लाशें हो गयी।

सालों पहले देश में चुनाव से पहले राजनैतिक रोटियां सेकी जाती थीं किन्तु आज बोटियाँ सेकी जा रही हैं। हे भारतीय राजनीति के संवेदनहीन नेताओं क्या आपको भूखे लोगों की कराह सुनाई नहीं देती? जिन्दा किसान के आंसू या सीमा पर लड़ते जवान की याद आपको क्यों नहीं आती या फिर जीवन से ज्यादा गुरुत्वाकर्षण मौत में हो गया? छात्र रोहित वेमुला ने आत्महत्या की थी। जब उसे उतारा गया था तो सुनने में आता है कि उसकी धड़कने चल रही थीं। लेकिन मरने इसलिए दिया गया क्योंकि वह जिंदा किसी के काम का नहीं था। अतः उसका मरना बेहद जरूरी था और राजनीति ने ऐसा ही किया कि छात्र रोहित की मौत पर जमकर सियासी ड्रामा हुआ था। आज बीजेपी का पक्ष कमजोर पड़ रहा है। क्योंकि OROP से नाखुश होकर पूर्व सैनिक ने आत्महत्या की है। जिस पर बीजेपी जवाब नहीं दे पा रही है और मौके की नज़ाकत को देखते हुए आम आदमी पार्टी और कांग्रेस आज सैनिकों के सबसे बड़े शुभचिंतक के रूप में उभर कर सामने आ रहे हैं। वह बात अलग है कि OROP का मामला 1973 से अटका हुआ था और कांग्रेस कुछ नहीं कर पाई थी।

संविधान के अनुसार आत्महत्या अपराध है। यदि कोई ऐसा करता है तो वह अपराधी है। किन्तु राजनेताओं के लिए यह अपराध शहादत बन जाता है। लेकिन सही अर्थो में तो ऐसा करने वाला कायर होता है। इसके बाद भी नेता कहते हैं कि हम भारतीय संविधान का सम्मान करते हैं। ऐसा नहीं है कि डेढ़ अरब की आबादी से एक रामकिशन या रोहित का चले जाना कोई भारी जन त्रासदी हुई है। जाना सबको है एक दिन हम भी जायेंगे किन्तु भगवान से यही प्रार्थना है कि मेरा शव राजनेताओं की वोट की दुकान न बने। रामकिशन की मौत के बाद राहुल गाँधी और केजरीवाल ने इस मामले में जमकर अफरातफरी मचाई। केजरीवाल ने तो शब्दों की गरिमा को भूलकर इसे केंद्र सरकार की गुंडागर्दी तक कह डाला और उनकी पार्टी ने तर्क रखा कि घटना दिल्ली प्रदेश में घटी है तो केजरीवाल के लिए यह जरूरी था। पर मुझे याद है कि सियाचिन में कई दिनों तक बर्फ में दबा रहने वाला जवान हनुमंतथप्पा भी दिल्ली के एक अस्पताल में जिन्दगी और मौत की जंग लड़ रहा था किन्तु उसके लिए राहुल और केजरीवाल के पास समय नहीं था।

देखा जाये तो इस देश में हर रोज हजारों लोग मरते हैं। कोई बीमारी से तड़फकर कोई भूख से लड़कर, कहीं दहेज के कारण बेटी तो कहीं कर्ज में डूबा बाप आत्महत्या कर लेता है। यहाँ न जाने कितने किसान आत्महत्या करते हैं पर उनकी मौत पर नेताओं के लिए उनके परिवार के लिए कोई संवेदना नहीं होती। दूर दराज गांवों की बात छोड़िए, देश की राजधानी में ही लोग भूख से तड़पकर मर जाते हैं लेकिन उनको लेकर न कोई चर्चा, न कोई अवार्ड वापसी, न ही मीडिया पर कोई प्रभाव पड़ता है। जैसे ही किसी अन्य समुदाय विशेष या धर्म विशेष में इस प्रकार की घटना घटती है तो नेतागण उसे विश्वस्तरीय मुद्दा बनाने से नहीं हिचकते। दूर न जाकर पास ही देख लो। पिछले हफ्ते सिमी के आठ आतंकी जेल तोड़कर फरार हुए जिन्हें बाद में मुठभेड़ में मार गिराया तो राजनेताओं ने उसे वोट से जोड़कर न्यायिक जाँच की मांग तक कर डाली। पूर्व जस्टिस काटजू ने तो इस मुठभेड़ में शामिल पुलिसकर्मियों के लिए फांसी की मांग तक कर डाली। जाने माने शायर मुनव्वर राणा ने भोपाल में सिमी के संदिग्ध आतंकियों के एनकाउंटर को फर्जी बताया और कहा कि एनकाउंटर में जब तक 5-10 पुलिसवाले और 15-20 लोग ना मारे जाए, तब तक एनकाउंटर कैसा? ये वही मुनव्वर राणा है जो अवार्ड वापसी करने वाली लिस्ट में सबसे ज्यादा चर्चित थे। बहरहाल इन लोगों पर क्यों अपनी कलम की स्याही बेकार की जाये; यह वही लोग हैं जो याकूब मेनन को भी फरिश्ता बता रहे थे। इनकी अपनी दुकानदारी है और अपने ग्राहक। शायद इसी वजह से दादरी, हैदराबाद तो कभी सुनपेड़ और भिवानी होते रहेंगे क्योंकि यहाँ हर दल की अपनी-अपनी लाशें हैं। – *सम्पादक*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

चलो; चलते-चलते काठमांडू दर्शन करते हैं

काष्ठमण्डप- जिसके नाम पर इस शहर का नाम काठमाण्डू पड़ा, एक विशाल यज्ञशाला थी। काठमांडू मे वैदिक धर्म की जड़ें अपभ्रंश रूप में मजबूत हैं, जो अपने आप में एक सुखद एहसास है।

यदि धार्मिक धरोहर सहेजने की बात की जाये तो नेपाल भारत से कुछ अंक ज्यादा ले जायेगा। कारण जहाँ हमने मुगल और ब्रिटिश साम्राज्य की सभ्यता को अपना इतिहास समझ उसे बचाकर रखा वहीं नेपाल ने अभी पुरातन हिंदुत्व सभ्यता सहेजने का काम किया। हिन्दू ही नहीं नेपाल ने बौद्ध मत का भी काफी रख रखाव किया। किन्तु उसे धार्मिक जीवन शैली तक ही सीमित रखा और सनातन परम्परा को अभी तक सामाजिक राजनैतिक जीवन शैली में कायम रखे हुए है। मतलब कि जैसे साप्ताहिक अवकाश रविवार की बजाय शनिवार को होता है। गाड़ियों पर देवनागरी हिंदी भाषा के शब्द और अंकों में नम्बर लिखे मिलेंगे। यहाँ अभी भी अंग्रेजी कलैंडर के बजाय सनातन हिन्दू आर्य कलेंडर ही प्रयोग होता है। आम जीवन में हिंदू धर्म का प्रभाव अभी भी कायम है। संघीय लोकतांत्रिक गणतंत्र के राष्ट्रपति से लेकर सड़कों पर मौजूद पुलिसकर्मियों तक, राज्य के अधिकारियों को अपनी हिंदू पहचान प्रदर्शित करने में कोई हिचक नहीं होती। ज्यादातर सार्वजनिक अवकाश हिन्दू त्यौहारों दशहरा, दिवाली और रामनवमी पर होते हैं। सरकारी विभाग नियमित रूप से कई मंदिरों और पारंपरिक अनुष्ठानों के लिए बजट जारी करते हैं। यही नहीं काठमांडू की सड़कों पर आपको कोई लघुशंका करता नहीं मिलेगा इसके लिए यहाँ प्रशासनिक स्तर पर भारी दंड का प्रावधान है।

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन काठमांडू सफलता के वैदिक नाद के साथ सम्पन्न हो चूका था देश-विदेश से आये हजारों की संख्या में आर्य लोग अपने घरों की ओर लौटने लगे थे। सम्मलेन की खुमारी इस तरह लोगों के मन मस्तिष्क पर हावी थी कि अभी तक लोग वैदिक भजन गुनगुनाते मिल जाते थे। आर्य समाज का शुभ वैदिक कार्यक्रम भली प्रकार सम्पन्न होने से हमारे मन भी पुष्प की भांति प्रफुलित थे। तो हमने काठमांडू घूमने का मन बनाया। सर्वप्रथम ये सोचा की जाया कहाँ जाये? फिर भी बिना किसी से पूछे निकल पड़े काठमांडू की तंग गलियों से होकर एक अनजान शहर में कुछ जाना पहचाना खोजने। थोड़ी दूर चलने के बाद काठमांडू स्थित बसंतपुर दरबार स्क्वेयर में हम लोग पहुँच चुके थे। यहाँ की मुख्य पहचान यहाँ का काठ मंडप जिसके बारे में कहा जाता है कि आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व महाभारत काल में काष्ठमंडल का निर्माण एक यज्ञशाला के रूप में श्री कृष्ण जी के लिए किया गया था और वह भी केवल एक ही वृक्ष की लकड़ी से। इसमें एक भी कील का इस्तेमाल नहीं हुआ था। तब से यहाँ पंच महायज्ञों का आयोजन प्रतिदिन होता है। भौर से पूर्व ही यह स्थान हजारों दीपकों से प्रकाशमान हो जाता है। लोग आते-जाते मंदिर के बाहर लोहे से बने गोलाकार हवनकुंड में आहुति देते रहते देखे जा सकते हैं। पक्षिओं को दाना डालते हैं। ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं। गरीबों को दान करते है। हालांकि शायद यहां के लोग नहीं जानते कि हम जो कार्य कर रहे हैं वह वैदिक पंचमहायज्ञ का अपभ्रंश रूप ही है। मंदिर तो पूरी तरह जमींदोज हो चुका है किन्तु हवन अभी प्रतिदिन चलता रहता है वैसे बसंतपुर के करीब 80% मंदिर तबाह हो गए। जमींदोज हुए मंदिरों में काष्ठ मंडप मंदिर, पंचतले मंदिर, दशावतार मंदिर और कृष्ण मंदिर शामिल हैं जो बाकी बचे हैं उन्हें लकड़ी की बल्लियों के सहारे खड़ा रखा गया है।

> ***........कहा जाता है कि आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व महाभारत काल में काष्ठमंडप का निर्माण एक यज्ञशाला के रूप में श्री कृष्ण जी के लिए किया गया था और वह भी केवल एक ही वृक्ष की लकड़ी से। इसमें एक भी कील का इस्तेमाल नहीं हुआ था। तब से यहाँ पंच महायज्ञों का आयोजन प्रतिदिन होता है। भौर से पूर्व ही यह स्थान हजारों दीपकों से प्रकाशमान हो जाता है। लोग आते-जाते मंदिर के बाहर लोहे से बने गोलाकार हवनकुंड में आहुति देते देखे जा सकते हैं। पक्षिओं को दाना डालते हैं। ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं। गरीबों को दान करते है। हालांकि शायद यहां के लोग नहीं जानते कि हम जो कार्य कर रहे हैं वह वैदिक पंचमहायज्ञ का अपभ्रंश रूप ही है। मंदिर तो पूरी तरह जमींदोज हो चुका है किन्तु हवन अभी प्रतिदिन चलता रहता है वैसे बसंतपुर के करीब 80 फीसदी मंदिर तबाह हो गए। जमींदोज हुए मंदिरों में काष्ठ मंडप मंदिर, पंचतले मंदिर, दशावतार मंदिर और कृष्ण मंदिर शामिल हैं। जो बाकी बचे हैं उन्हें लकड़ी की बल्लियों के सहारे खड़ा रखा गया है। .....***

इसके अलावा काठमांडू दरबार स्क्वायर में एक मंदिर ऐसा भी है जोकि हिन्दू और जैन दोनों धर्म के मानने वालों के लिए है और ये तीन मंजिला है। इस मंदिर का शिल्प वास्तव में अद्भुत है। यहाँ पर एक मंदिर शिव पार्वती मंदिर के नाम से भी है और यह भी यहाँ का प्रसिद्ध मंदिर है। इसके अलावा यहाँ पर कुमारी महल भी है कहा जाता है यहाँ पर जीवित कुमारी रहती है। यह एक मठ की तरह है। एक लड़की को जीवित देवी माना जाता है और वह वहाँ तब तक रहती है जब तक कि वह अपनी एक कुमारी अवस्था को खत्म कर सामान्य जीवन में नहीं लौट जाती। ऐसा माना जाता है कि जब देवी अपनी सामान्य अवस्था में लौट आती है तो भी उसे विवाह आदि या किसी पुरुष से दूर ही रखा जाता है। हम भी कुंवारी देवी के दर्शन के लिए इस महल में चले गये । यहाँ आकर पता चला कि देवी बहुत अलग-अलग समय पर दर्शन देती है। अभी जो उनके दर्शन का समय था उसमें कुछ समय बाकि था। एक बार को तो मन हुआ कि छोड़ो। लेकिन उसके बाद फिर भी अशोक जी के कहने पर खड़े रहे थोड़ी देर बाद विदेशी लोग भी आने लगे और करीब 5 मिनट बाद तो वहाँ पर काफी भीड़ हो गई। मंदिर प्रशासन की ओर से सबको शांत रहने की सलाह दी। सब खामोश हो गये अब बस केवल खिडकियों पर बैठे कबूतरों की गुटरगूं सुनाई दे रही थी। हमारे सामने ही एक खिड़की लगी हुई थी जिसमें बताया गया था कि यहाँ से देवी दर्शन देंगी। अब अचानक खिड़की से एक वृद्ध स्त्री जो कभी पहले वहां देवी रही होगी उसके इशारे पर देवी ने दर्शन दिए। देवी ने किसी भी भक्त की तरफ देखा तक नहीं सामने देखती रही। भक्तों ने उनको प्रणाम किया। किसी को भी ज्यादा जोर से बोलने और फोटो खींचने की मनाही थी। एक मिनट बाद ही देवी वापस अंदर चली गई।

जीवित देवी यानि कुमारी कोई 10 या 12 साल की एक बच्ची थी जिसका श्रृंगार प्राचीन नेपाली ढंग से किया गया था। काजल आँखों से शुरू होकर कानों तक लगा था। पीताम्बर वस्त्र धारण किये हुए थी। अब हमें सिर्फ यह पता करना बाकी था कि जीवित देवी का चयन किस आधार पर होता है। पहले तो हम लोगों ने मंदिर प्रशासन से पता किया लेकिन उन्होंने इस बारे में कम समय का हवाला देकर बताने से स्पष्ट इंकार कर दिया किन्तु अन्य लोगों से जो जानकारी जुटाई वह इस प्रकार थी कि नेपाल में कुमारी के चयन के मापदंड सख्त हैं। शारीरिक विशेषताओं के साथ बहुत सारी अनिवार्यताओं पर खरा उतरना जरूरी होता है। तब कहीं वह कुमारी बन पाती है। सोलहवीं सदी में राजाओं ने जब इस जगह को बनवाया तो तेलजू मंदिर के तहखाने के अन्दर एक लड़की चली गयी। तहखाने के अन्दर घोर अँधेरा था और लड़की बिना डरे उसमें अन्दर थी तो पुजारियों ने उसे जीवित देवी का दर्जा दिया। इसके बाद परम्परा चलती आ रही है कि जो लड़की तेलजू मंदिर के तहखाने में बिना डरे रह लेती है उसे ही जीवित कुमारी मान लिया जाता है और उसे बाद में कुमारी देवी के मंदिर में भेज दिया जाता है। ज्ञात रहे नेपाल में राजशाही के दौरान राजा बनने की शपथ से लेकर हर अति महत्त्वपूर्ण काम बिना कुमारी देवी के आर्शीवाद के बिना नहीं होते थे।

काठमांडू का प्राचीन नाम काष्टमंडप था। कालांतर में अपभ्रंश के रुप में काठमांडू जाना जाता है। इसके बाद अगले दिन हम लोग रॉयल पैलेस देखने की इच्छा लिए निकल पड़े तो पता चला यह सिर्फ सुबह 11 बजे से सायं तीन बजे तक खुलता है। हम थोड़ा लेट थे तो इसके बाद हम पशुपति नाथ मंदिर देखने पहुंचे। नेपाल की पहचान पशुपति नाथ के कारण ही है, अधिकतर हिन्दू तीर्थयात्री पशुपतिनाथ के ही दर्शन करने नेपाल पहुंचते हैं। यहाँ पहुंचने पर भी आम भारतीय मंदिरों जैसा दृश्य दिखाई दिया। भभूत लपेटे साधू महात्मा। मंदिर के अन्दर कीर्तन आरती गाते लोग वही माला, मोती, पूजन सामग्री की दुकानें सजी हुई थी। नेपाल की अधिकतर दुकानों में मालिक नहीं मालकिनें ही दिखाई दी। मंदिर परिसर में कैमरे का प्रयोग वर्जित है। लगभग बड़े मंदिरों में कैमरे का प्रयोग वर्जित कर दिया जाता है। सुरक्षा कारण बता कर इसका व्यावसायिक लाभ उठाया जाता है तथा मंदिर समिति द्वारा चित्र बेचे जाते हैं।

मंदिर के मुख्यद्वार में प्रवेश करने पर पीतल निर्मित विशाल नंदी बैल दिखाई देता है। किसी भी धातु निर्मित इतना बड़ा नंदी मैंने अन्य किसी स्थान पर नही देखा। लगभग 7 फुट के अधिष्ठान पर सजग नंदी स्थापित है। मंदिर पगौड़ा शैली में काष्ठ निर्मित है। मंदिर के शीर्ष पटल पर राजाज्ञा लगी हुई है तथा राजाओं के चित्रों के साथ द्वारा किए गए निर्माण की तारीखें भी लिखी हुई हैं। मंदिर के शीर्ष एवं दरवाजों पर सुंदर कलाकृतियों का निर्माण हुआ है। लकड़ियों पर भी बेलबूटों के साथ मानवाकृतियों की खुदाई की हुई है। मंदिर के पूर्व की तरफ के परकोटे से झांकने पर बागमति नदी दिखाई देती है। नेपाल के निवासी धार्मिक कर्मकांड एवं पिंडदान इत्यादि इसी नदी के किनारे पर कराते दिखाई दिए। जिस समय हम पहुंचे एक दाह संस्कार हो रहा था तो थोड़ी दूरी पर दूसरे की तैयारी चल रही थी। नदी के किनारे मुक्ति घाट, आर्य घाट बना हुआ है, यहाँ अंतिम संस्कार क्रिया होती है। इसके साथ मृतक संस्कार करवाने के लिए कई घाट बने हुए हैं। जिसका निर्माण पुराने समय के शासकों ने कराया है। पशुपति नाथ के दर्शन करने में ही अँधेरा हो गया हमारा कारवां चल पड़ा अगले पड़ाव की ओर..।- ***राजीव चौधरी***

बोध कथा

बांटकर खाओ

एक बार स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी के साथ मैं कलकत्ता गया। एक सेठ जी के पास हम दान लेने गए।

सेठ साहब ने कहा-'आप पहले मुझसे बात कर लीजिए। मेरे साथ खाना भी खाईये।' हमने कहा-'बहुत अच्छा।'

भोजन के समय हम उनके पास पहुँचे। हमारा भोजन तो ठीक था, परन्तु सेठ जी की थाली थी चाँदी की। उसमें एक कटोरा भी चाँदी का था। थाली में जापानी गुब्बारे के समान फूला एक फुलका पड़ा था। चाँदी के कटोरे में थोड़ा-सा पीला पानी था। पता लगा कि सेठ जी यही एक फुलका और पीला पानी खायेंगे। आश्चर्य के साथ हमने पूछा-'सेठजी! आप इतना ही खाते हैं?'

वे बोले-'हाँ, इससे अधिक पचता नहीं।' हमने कहा-'कोई मक्खन या दूध तो लेते होंगे प्रातः?'

उन्होंने कहा-'राम-राम करो जी! मेरे छोटे भाई ने एक बार दूध पिया था, पेट में बादल-जैसे गरजने लगे। तब से हमारे घर में कोई दूध नहीं पीता।'

महात्माजी ने कहा-'लस्सी तो पीते होंगे आप?' सेठजी बोले-'एक बार दो दिन लस्सी पी थी। महीना-भर ज़ुकाम रहा, इसके बाद कभी नहीं पी।'

मैंने कहा-'बादाम, पिस्ता, किशमिश तो खाते होंगे कभी?' वे बोले-'बादाम पचते नहीं। पिस्ता बहुत गर्म होता है। किशमिश मैं जानता नहीं कि क्या होती है।'

महात्मा ने कहा -'फिर फल ही खा लिया करो।'

सेठजी बोले -'वे मेरे अनुकूल नहीं बैठते।' मैंने दिल-ही-दिल में कहा-'फिर संखिया खाओ, वही तुम्हारे लिए रह गया है।' यह है कम्युनिज़्म का वास्तविक कारण! ये लोग न स्वयं खाते हैं, न दूसरों को खिला सकते हैं। यह नहीं करते कि स्वयं न खा सकें तो दूसरों को ही खिला दें। दुनिया में भूख न रहने दें। ग़रीबी न रहने दें। इनके ग़लत दृष्टिकोण से कम्युनिज़्म पैदा होता है।

साभार: बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष — 133वां महर्षि दयानन्द सरस्वती .....

हम आर्यों का क्या कर्त्तव्य है उन्हें नहीं भूलना चाहिए
– राज कुमार आर्य

कार्यक्रम की अध्यक्षता महाशय धर्मपाल जी ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री राज कुमार आर्य (प्रभारी पतंजलि योग समिति दिल्ली प्रदेश) ने समस्त आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि 'हम आर्यों का क्या कर्त्तव्य है उन्हें नहीं भूलना चाहिए।' वैदिक वक्ता डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने अपने उद्बोधन में कहा 'ऋषि सत्य का शोधन थे और सत्य पर ही शहीद हो गए। आर्य समाज ऋषि दयानन्द का स्मारक है, वर्तमान को सम्भाल लो भविष्य उज्ज्वल है।' स्वामी सम्पूर्णानन्दजी ने अपने उद्बोधन में आर्य समाज के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए युवाओं का आह्वान किया। महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि 'जो मार्ग ऋषि ने दिखाया है हमें उसका अनुसरण करते हुए उसी सद्मार्ग पर आगे बढ़ते जाना है और देश की संस्कृति और संस्कृत की सुरक्षा के लिए आर्य समाज का विस्तार नितांत आवश्यक है।' कार्यक्रम की रोचकता को बनाए रखते हुए बीच-बीच में आर्य भजनोपदेशक श्री देव आर्य जी व उनके साथियों द्वारा महर्षि दयानन्द जी के सुमधुर भजन प्रस्तुत किये गये। युवा उभरती भजनोपदेशिका सुश्री भावना गुप्ता ने ऋषि दयानन्द का कर्णप्रिय भजन प्रस्तुत कर सभी जनों को भाव विभोर कर दिया। आर्य समाज जनकपुरी सी-3 के बच्चों ने हृदयस्पर्शी समूह गान प्रस्तुत किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित किए गए नववर्ष 2017 कैलेण्डर का विमोचन स्वामी प्रणवानन्द जी ने किया। इस अवसर पर 'स्वामी विद्यानन्द सरस्वती वैदिक विद्वान् पुरस्कार आचार्य ब्रह्मदेव विद्यालंकार जी को प्रदान किया गया। कार्यक्रम के अन्त में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने आगामी कार्यक्रमों की सूचना प्रदान की व सर्वश्री सुरेन्द्र कुमार रैली, वरिष्ठ उपप्रधान, सतीश चड्डा, कार्यकारी महामन्त्री ने सभी का धन्यवाद किया व शांतिपाठ के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

सम्बोधित करते महाशय धर्मपाल जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, श्री राजकुमार आर्य जी। श्री योगेश मुंजाल जी का स्वागत करते श्री कीर्ति शर्मा। श्री प्रेम अरोड़ा जी का स्वागत करते श्री अजय सहगल। ध्वजारोहण करते श्री बलदेवराज सेठ जी साथ में हैं श्री सुरेन्द्र रैली, स्वामी प्रणवानन्द जी एवं अन्य आर्य महानुभाव।

महाशय धर्मपाल जी का सम्मान करते स्वामी सम्पूर्णानन्द, श्री योगेश मुंजाल एवं श्री प्रेम अरोड़ा। आचार्य ब्रह्मदेव विद्यालंकार को पं. गुरुदत्त विद्यार्थी स्मृति सम्मान प्रदान करते महाशय धर्मपाल जी, साथ में हैं सर्वश्री सतीश चड्डा, डॉ. मुमुक्षु आर्य, उषा किरण आर्या, अभिमन्यु चावला एवं श्री धर्मपाल आर्य जी। एवं बच्चों द्वारा गीत की प्रस्तुति।

प्रथम पृष्ठ का शेष — भारत भर में फैले स्मॉग का वैदिक उपचार.....

यही नहीं उन्होंने आगे भी कक्ष की हवा में मौजूद जीवाणुओं का परीक्षण किया और पाया कि कक्ष के दरवाजे खोले जाने और सारा धुआं निकल जाने के 24 घण्टे बाद भी जीवाणुओं का स्तर सामान्य से 96 प्रतिशत कम था। बार-बार परीक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि इस एक बार के धुएं का असर एक माह तक रहा और उस कक्ष की वायु में विषाणु स्तर 30 दिन बाद भी सामान्य से बहुत कम था। हवन के द्वारा न सिर्फ मनुष्य बल्कि वनस्पतियों व फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले बैक्टीरिया का नाश होता है जिससे फसलों में रासायनिक खाद का प्रयोग कम हो सकता है।

क्या हो हवन की समिधा (जलने वाली लकड़ी):-

मदार की समिधा रोग को नाश करती है, पलाश की नकारात्मक ऊर्जा समाप्त करने वाली, पीपल की प्रजा (सन्तति) काम कराने वाली, गूलर व शमी की शांति देने वाली, दूर्वा की दीर्घायु देने वाली और कुशा की समिधा सभी मनोरथ को सिद्ध करने वाली होती है अर्थात् कार्य क्षमता बढ़ाने वाली होती है।

हव्य पदार्थ (आहुति देने योग्य द्रव्यों) के प्रकार

प्रत्येक ऋतु में आकाश में भिन्न-भिन्न प्रकार के वायुमण्डल रहते हैं। सर्दी, गर्मी, नमी, वायु का भारीपन, हलकापन, धूल, धुँआ, बर्फ आदि का भरा होना। विभिन्न प्रकार के कीटाणुओं की उत्पत्ति, वृद्धि एवं समाप्ति का क्रम चलता रहता है। इसलिए कई बार वायुमण्डल स्वास्थ्य कर होता है। कई बार वायुमण्डल अस्वास्थ्य कर हो जाता है।

इस प्रकार की विकृतियों को दूर करने और अनुकूल वातावरण उत्पन्न करने के लिए हवन में ऐसी औषधियाँ प्रयुक्त की जाती हैं जो इस उद्देश्य को भली प्रकार पूरा कर सकती हैं।

होम द्रव्य

होम-द्रव्य अथवा हवन सामग्री वह जल सकने वाला पदार्थ है जिसे यज्ञ (हवन/होम) की अग्नि में मन्त्रों के साथ डाला जाता है।

(1) **सुगन्धित :** केशर, अगर, तगर, चन्दन, इलायची, जायफल, जावित्री, छड़ीला, कपूर, कचरी, बालछड़, पानड़ी आदि। (2) **पुष्टिकारक :** घृत, गुग्गुल, सूखे फल, जौ, तिल, चावल शहद नारियल आदि। (3) **मिष्ट** - शक्कर, छुहारा, दाख आदि। (4) **रोग नाशक**- गिलोय, जायफल, सोमवल्ली, ब्राह्मी, तुलसी, अगर-तगर, तिल, इंद्रा, जव, आंवला, मालकांगनी, हरताल, तेजपत्र, प्रियंगु, केसर, सफेद चन्दन, जटामांसी आदि।

उपरोक्त चारों प्रकार की वस्तुएँ हवन में प्रयोग होनी चाहिए। अन्नों के हवन से मेघ-मालाएँ अधिक अन्न उपजाने वाली वर्षा करती हैं। सुगन्धित द्रव्यों से विचार शुद्ध होते हैं, मिष्ट पदार्थ स्वास्थ्य को पुष्ट एवं शरीर को आरोग्य प्रदान करते हैं, इसलिए चारों प्रकार के पदार्थों को समान महत्त्व दिया जाना चाहिए। यदि अन्य वस्तुएँ उपलब्ध न हों तो जो मिले उसी से अथवा केवल तिल, जौ, चावल से भी काम चल सकता है।

सामान्य हवन सामग्री

तिल, जौ, सफेद चन्दन का चूरा, अगर, तगर, गुग्गुल, जायफल, दालचीनी, तालीसपत्र, पानड़ी, लौंग, बड़ी इलायची, गोला, छुहारा, नागर मोथा, इन्द्र जौ, कपूर कचरी, आँवला, गिलोय, जायफल, ब्राह्मी, तुलसी आदि का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए महत्त्वपूर्ण है।

संकलन कर्ता-
डॉ. श्वेत केतु शर्मा, सदस्य
हिन्दी सलाहकार समिति भा. सरकार

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल - 2016 : कुछ अविस्मरणीय पल

यज्ञ ब्रह्मा के रूप में उपस्थित पाणिनी कन्या गुरुकुल वाराणसी पधारी आचार्या एवं ब्रह्मचारिणी। आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को संन्यासियों का आशीर्वाद।

पारम्परिक वेशभूषा में शोभा यात्रा में सम्मिलित हुए बच्चे। महात्मा बशेश्वर और महर्षि दयानन्द पुस्तक का लोकार्पण करते योगी आदित्य नाथ एवं स्वामी सुमेधानन्द जी।

सम्मान : योगी आदित्य नाथ को स्मृति चिह्न भेंट करते श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी एवं श्री ओम प्रकाश आर्य (बस्ती)। स्वामी सुमेधानन्द जी स्मृति चिह्न भेंट करते स्वामी धर्मानन्दजी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी का सम्मान करते माधव प्रसाद उपाध्याय जी। आचार्य ज्ञानेश्वर जी को स्मृति चिह्न भेंट करते श्री अशोक आर्य एवं श्री विनय आर्य जी।

सम्मान : आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान श्री हरिदेव रामधनी जी का सम्मान। दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी का सम्मान। पं. इन्दा किन्नो (हौलैंड) का सम्मान एवं महासम्मेलन के मुख्य संयोजक स्वामी सम्पूर्णानन्द जी को स्मृति चिह्न भेंट करते सार्वदेशिक सभा एवं नेपाल आर्यसमाज के पदाधिकारीगण तथा उपपस्थित जन सैलाब।

विमोचन करते सर्वश्री सुरेन्द्र रैली, प्रेम अरोडा, महाशय धर्मपाल, स्वामी सम्पूर्णानन्द, धर्मपाल आर्य, योगेश मुंजाल, डॉ. महेश विद्यालकार, श्री राजकुमार आर्य, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री एवं अन्य अतिथिगण।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

कैलेण्डर 2017 का विमोचन

आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित 133वें ऋषि निर्णाणोत्सव समारोह के अवसर पर मुख्य मंच से दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित किए गए कैलेण्डर वर्ष 2017 का विमोचन किया गया। कैलेण्डर सभा कार्यालय में मात्र 1200/- सैंकड़ा की दर से सभी आर्यसमाजों तथा आर्यजनों के लिए उपलब्ध है।

Glimpses of the SamaVeda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Ten Horses of a Chariot

"Harness, O Divine Lord, the vital forces to train the horses that swiftly carry my body to the benevolent goal of desired results."

O Adorable Lord, you have placed high the eternal sun in the firmament, may it give me light and life. you sustain the swiftly moving earth, may it bestow on me endurance. O Guardian of the three regions, may you guard my upper, middle and lower body. May my limbs be vigilant, upholding and protecting my form. O bounties of Nature, enthuse my spirit. I invoke the resplendent chariot, my ten organs of sense and execution. May they, the mighty, heroic, speedy and adorable ones smite the malicious pleasue that shuts the door of bliss. May the horses be ever triumphant spreading out to all the regions by their mighty power. May I yoke today unto the pole of eternal law, the vigorous and radiant horses of my body-chariot and live long with laurels of success.

अग्ने युड्.क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः।
अरं वहन्त्याशवः।। (Sv.1383)

Agne yunksva hi ye tavasvaso deva sadhavah.
aram vahantyasavah..

'Soma', the Medicinal Herb

Soma is mentioned in some verses as something superb in medicinal value capable of curing ailments of all types. 'I am Soma among medicinal herbs' is said by the Lord in scriptures. As per Sama Veda, each herb has some content of Soma. The curing characteristics of the herb are supposed to be proportional to the extent of Soma-ingredient contained in it.

"Soma, you represent these medicinal herbs. You have generated the entire waters and the milch cows. You dispel darkness with light while you sustain and extend the mid regions."

"Soma is cleaned, washed, soaked in water, cut into pieces and crushed under stones and the juice is extracted and taken as drink. It brings peace, happiness and prosperity generating wisdom to rightly perform our duties. 'May you enter into the innermost consciousness of my soul with intense exhilaration, I pray.' -such is the prayer to Soma.'

त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः।
त्वमातनोरुर्वा३न्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ।। (Sv.604)

Tvamima osadhih soma visvastvam apo ajanayas tvam gah.
tvam atanor urva'ntariksam tvam jyotisa vi tamo vavartha..

एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति।
इन्द्रमा विश बृहता मदेन वर्धया वाचं जनया पुरंधिम्।। (Sv.861)

eva nah soma parisicyamana a pavasva puyamanah svasti.
indrama visa brhata madena vardhaya vacam janaya purandhim.

The Seasons

Each season appears on the earth as an auspicious gift of the Lord with its manifest beauty and utility. Each brings favourable weather when there are plants with their health-giving leaves as well as flowers and fruits. The cycle of seasons is a boon for ensuring long and healthy life of all beings.

A foolish man is seen to find fault with the divine creation. He only points out the defects of each season ignoring the benefit he receives. He blames the heat of summer and the cold of winter. He eagerly waits for the rainy days to come and then grumbles when it starts raining. But a person with a positive attitude realizes the heavenly law and the purpose of the divine gifts. He remains grateful to the Creator God. The verse, revealed at the dawn of creation, gives the details of seasons extolling their charm, elegance and utility.

Childhood is like the spring season that provides learning with delight. Youth symbolizes summer. Then comes the rainy season with fruitful gowth. Man faces the frigid winter in his declining years. Life thus rolls on with growing age and the many experiences. The seasons, thus visualized and understood, keep on exhilarating one's life.

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिरः इन्नु रन्त्यः।। (Sv.616)

Vasanta innu rantyo grisma innu rantyah.
varsanyanu sarado hemantah sisirah innu rantyah..

To be Conti....

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ – 15 : वाक्य बनाना

–आचार्य संदीप कुमार उपाध्याय

गतांक से आगे....

वाक्य बनाना (To make a sentence)

कर्ता (subject) कर्म (object) क्रिया (verb)

सः पुस्तकं पठति। (He reads a book)
त्वं फलं खादसि (You eat a fruit)
अहं पाठशालां गच्छामि (I go to school)

शब्द

सः=वह। त्वम्=तू, तुम। अहम्=मैं।
गच्छति=वह जाता है।
त्वं गच्छसि=तू जाता है।
अहम् गच्छामि=मैं जाता हूँ।

शब्द

कुत्र= कहाँ। अत्र= यहाँ। यत्र= जहाँ। तत्र= वहाँ। सर्वत्र=सब जगह। किम्=क्या।

(स्थान-वाचक)

१ त्वम् कुत्र गच्छसि=तुम कहाँ जाते हो?
२ यत्र सः गच्छसि=जहाँ वह जाता है।
३ अहं तत्र गच्छामि= मैं वहाँ जाता हूँ।
४ सः कुत्र गच्छति= वह कहाँ जाता है?
५ यत्र अहम गच्छामि=जहाँ मैं जाता हूँ।
६ त्वं सर्वत्र गच्छसि=तू सब स्थान पर जाता है।
७ किं सः गच्छति?=क्या वह जाता है?
८ सः गच्छति किम्?=वह जाता है कहाँ?
९ सः कुत्र गच्छति?= वह कहाँ जाता है?
१० यत्र त्वं गच्छति=जहाँ तुम जाते हो।
११ त्वं गच्छसि किम्?=तू जाता है क्या?
१२ अहं सर्वत्र गच्छामि= मैं सब जगह जाता हूँ।

इन वाक्यों में स्थान के नाम भर दो तो नया वक्य बन जाता है जो ऊपर के प्रश्नों के उत्तर हैं।

अहं गृहम् गच्छामि= मैं घर को जाता हूँ। त्वं पाठशालाम् गच्छसि=तुम स्कूल जाते हो। आदि आदि।

वर्तमान काल- गम् (गच्छ) धातु (क्रिया)

	ए.व.	द्वि.व.	बहु.व.
प्र. पु.	ति	तः	अन्ति
म. पु.	सि	थः	थ
उ. पु.	मि	वः	मः

उदाहरण-

प्र.पु.- सः गच्छति- वह जाता है। तौ गच्छतः वे दोनों जाते हैं। ते गच्छन्ति- वे सब जाते हैं।

म.पु- त्वं गच्छसि-तुम जाते हो। युवां गच्छाथः – तुम दोनों जाते हो। यूयं गच्छथ – तुम सब जाते हो।

उ.पु.- अहम् गच्छामि मैं जाता हूँ। आवां गच्छावः -हम दोनों जाते हैं। वयं गच्छामः – हम लोग जाते हैं।

भूतकाल-गम्-धातु-

सः अगच्छत्-वह गया। तौ अगच्छताम्- वे दोनों गये। ते अगच्छन् – वे लोग गये। त्वं अगच्छः – तुम गये। युवां अगच्छम्-तुम दोनों गये। यूयं अगच्छत- तुम लोग गये। अहं अगच्छम्- मैं गया। आवां अगच्छाव- हम दोनों गये। वयं अगच्छाम्-हम लोग गये।

भविष्यत् काल-गत्-धातु- सः गमिष्यति- वह जायेगा। तौ गमिष्यतः- वे दोनों जायेंगे। ते गमिष्यन्ति-वे लोग जायेंगे।

त्वं गमिष्यसि- तुम जावोगे। युवां गमिष्यथः- तुम दोनों जावोगे। यूयं गमिष्यथ- तुम लोग जावोगे। अहम् गमिष्यामि- मैं जाऊँगा। आवां गमिष्यावः- हम दोनों जायेंगे। वयं गमिष्यामः-हम लोग जायेंगे।

वाक्य बनाना-अब प्रश्न उठता है कि- कहाँ जाना है?

आफिस (कार्यालयम्), बाजार (आपणम्), बाग (उद्यानम्), घर (गृहम्), खेल का मैदान (क्रीडांगनम्) यहाँ (अत्र), वहाँ (तत्र), सब जगह (सर्व) आदि आदि। जो उत्तर मिले उसे वक्य में जोड़ दीजिये। जैसे-

हम लोग सिनेमा गये।

संस्कृत-वयं चलचित्रम् अगच्छाम।

इसको ऐसे भी लिख सकते हैं- वयं चलचित्रमगच्छाम या वयामगच्छाम चलचित्रम्। इन सबका एक ही अर्थ है।

शब्द-

सः तू =वह। त्वम्=तू, तु। युष्मान्=तुम सब=या आप लोग। अहम्=मैं। ते=वे। वयम्=हम।

गच्छति=मैं जाता है।= तुम जाते हो। गच्छसि=तुम जाते हो। गच्छामि=मैं जाता हूँ।

वाक्य-

सः गच्छति= वह जाता है।
त्वं गच्छसि=तुम जाते हो।
अहम् गच्छामि= मैं जाता हूँ।

शब्द

स्थान वाचक-क्या। = सब स्थान पर। किम् = वहाँ। कुत्र= कहाँ। यत्र= यहाँ। अत्र=यहाँ। तत्र=वहाँ। सर्वत्र= सब स्थान पर। किम्= क्या।

समय वाचक क्या। यदा=जब। कदा= कब। सदा=सदा, हमेशा। सर्वदा=सदा, हमेशा। तदा=तब। सायम्=शाम को। प्रातः=प्रातःकाल, सबेरे। रात्रौ=रात्रि में। श्वः=कल (आने वाला)। परश्वः=परसों। दिवा= दिन में। मध्याह्न=दोपहर में। अद्य=आज। ह्यः=कल (बीता हुआ) अधुना=अब। इदानीम्= अब।

यदि=यदि, अगर। तर्हि=तो। यथा=जैसे। तथा=वैसे। अपि=भी। नहि=नहीं। च=और। भवान्=आप। एव=ही। किमर्थम्=किस लिये। पश्चात्=पीछे से। पूर्वम्=पहले। शीघ्रम्= जल्दी। इति= ऐसा। वा=अथवा,या। किंवा=या। अवश्यम्= अवश्य, जरूर। पर्यन्तम्= तक। सुष्ठु= ठीक, अच्छा। कुतः= किसलिये। अतः= इसलिये। यतः=जिसलिये। यद्=जो कि। एतद्=यह। तद्=वह। अतीव=बहुत। अल्पम्=थोड़ा। क्व=कहाँ। यस्य=जिसका। कस्य=किसका। अस्य=इसका। न= नहीं। = है। नास्ति= नहीं। अस्ति=है। गृहम् स्कूल को य = बाजार को। पाठशालाम्= गांव को। आपणम्= शहर को। ग्राममम्=घर को। नगरम्=शहर को। ग्रामम्=गांव को। उद्यानम्= बाग को। पाठशालाम्=स्कूल को या विद्यालय को।

वाक्य-

त्वम् कुत्र गच्छसि-तुम कहाँ जाते हो?
यत्र सः अपि गच्छसि-जहाँ वह भी जाता है।
अहं तत्र गच्छामि- मैं वहाँ जाता हूँ।
सः कुत्र गच्छसि- वह कहाँ जाता है?
यत्र अहं गच्छामि-जहाँ मैं जाता हूँ।

गम् जाने के लिये -गन्तुम् – गच्छ धातु के दूसरे रूप-गत्वाजा कर=गतःगया=गतम् गया। आगच्छ – आना। आगन्तुम्= आने के लिये। आगत्वा=आ कर। आगतः=आया, आगतम्=आया।

– *क्रमशः*

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के सहयोग से देहरादून में

16वां आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के तत्वावधान में 16वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आर्य समाज धामावाला देहरादून में संपन्न हुआ। इस आयोजन का उद्देश्य जात-पात को मिटाकर आर्य वैदिक समतामूलक समाज बनाना है। इस सम्मलेन में योग्य युवक-युवतियां अपने अभिभावकों के साथ पधारे एवं अपनी-अपनी योग्यता और रुचियों को प्रकट किया। राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्ढा, उत्तराखण्ड सभा प्रधान श्री देवराज आर्य, श्री आर सी आर्य जी, श्री ज्ञानचन्द आर्य जी,श्री महेशचन्द शर्मा जी, श्री नवीन भट्ट आदि का पूर्ण सहयोग मिला। *-डॉ. विनय विद्यालंकार, प्रान्तीय संयोजक*

17वां आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन - 15 जनवरी, 2017 आर्यसमाज अशोक विहार-1, दिल्ली : पंजीकरण फार्म पृष्ठ 8 पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल : 20-21-22 अक्तूबर, 2016 के अवसर पर

नेपाल में आर्यसमाज के लिए भूमि क्रय एवं भवन निर्माण हेतु

दान देने वाले आर्य महानुभावों की सूची

1.	श्री विजय सिंह गहलौत, अजमेर (राज.)	100000	46.	श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री, नेपाल	312
2.	श्री गंगा प्रसाद, प्रधान बिहार आर्य प्र. सभा	101100	47.	श्रीमती गीता देवी थरूनी, नेपाल	312
3.	श्री हरीश सचदेवा, न्यूजीलैंड	100000	48.	श्री रामाशीष आर्य, सीतामढ़ी, बिहार	250
4.	श्रीमती कुसुम लता आर्य, नेपाल	31875	49.	गुप्तदान,	1312
5.	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, विराट नगर, नेपाल	3750	50.	गुप्तदान	2200
6.	श्री रघुवर प्रसाद आर्य, मुजफ्फरपुर	511	51.	श्री दशरथ प्रसाद, बिहार	100
7.	श्री लक्ष्मण राव उपाध्याय, नेपाल	375	52.	श्री सुरेन्द्र कमग्चन्दानी, पुणे	5000
8.	श्री नीशू राउत, नेपाल	125	53.	डॉ. उमाशंकर शास्त्री, पूर्वी चम्पारण	1005
9.	श्री वीरेन्द्र नारायण आर्य, चम्पारण बिहार	525	54.	श्रीमती स्व. गंगा बाई (भ्रताराम पाटिल) लातूर	1000
10.	श्री धीरेन्द्र प्रसाद साह, काठमाण्डू	628	55.	गुप्तदान	625
11.	श्रीमती सुमित्रा बरनवाल, नेपाल	315	56.	आर्य समाज ब्यापुर पटना (बिहार)	1000
12.	श्रीमती शकुन्तला बरनवाल, नेपाल	312	57.	डॉ. खजान सिंह गुलिया, रोहतक	2000
13.	श्री सत्य काम शर्मा, दिल्ली	1600	58.	श्री राम कुमार खोखर, रोहतक	500
14.	श्रीमती कमलेश देवी आर्य, हिसार	1100	59.	गदयाना आर्य समाज, नेपाल	2072
15.	श्री दिलीप सिंह आर्य, हिसार	500	60.	श्री उदय प्रताप, गोरखपुर	1100
16.	श्री मा. रतन सिंह आर्य, हिसार	500	61.	डॉ. विनय प्राणाचार्य, प्रधान आर्य स.गोरखपुर	1100
17.	श्री महेन्द्र सिंह आर्य, हिसार	500	62.	श्री आर्य रणजीत सर्राफ, चौरा-चोरी	1100
18.	श्री शैलेन्द्र सिंह, बुलन्दशहर	1101	63.	श्री अशोक सेठी/ श्रीमती उषा सेठी, फरीदाबाद	5100
19.	श्री कमलेश सिंह, बड़ोदरा	1101	64.	डॉ. अरुण कुमार गुप्ता प्रधान आर्य स.समस्तीपुर	501
20.	श्री केशव नारायण प्रसाद, मुजफ्फरपुर	511	65.	श्रीमती तारा देवी चौरसिया, नेपाल	631
21.	आर्य समाज राजाजी पुरम, लखनऊ	16101	66.	श्री सुबोध बिहारी आर्य मंत्री आर्य समाज ढाका	525
22.	श्री अशोक माणिकटाला, हरिद्वार	2100	67.	गुप्त दान	432
23.	श्री आर्य समाज बी.एच.ई. एल., हरिद्वार	5100	68.	श्री एच.बी.एस. राना, दिल्ली	3100
24.	श्री राहुल आर्य पुत्र श्री विष्णु शर्मा, हिसार	400	69.	श्रीमती मीरा आर्य, पूर्वी चम्पारण	1100
25.	श्री सुधीर कुमार ठुकराल, अमृतसर पुतलीघर	3100	70.	पं. मधुसुदन शास्त्री, सिलीगुड़ी	62
26.	श्री नवीन कुमार, मुरादाबाद	1000	71.	श्री पुरुषोत्तम कालमिक आर्य, विदर्भ	1001
27.	श्री सत्यप्रिय मदान, फरीदाबाद	12750	72.	गुप्तदान	131
28.	श्री विकास मदान, फरीदाबाद	12750	73.	गुप्तदान	94
29.	श्री सोम प्रकाश, फरीदाबाद	12750	74.	श्री दिलबाग आर्य हरियाणा	1100
30.	श्रीमती दर्शन देवी, फरीदाबाद	12750	75.	गुप्तदान	65
31.	आर्य उप प्रतिनिधि सभा, धौलपुर, (राज.)	2100	76.	श्री हरि शंकर प्रसाद आर्य, पूर्वी चम्पारण	505
32.	श्री राम सनेही शर्मा, मुरैना (म.प्र.)	500	77.	गुप्तदान	500
33.	श्री शमशेर सिंह आर्य, कैथल	1100	78.	श्री चुल्लई पासवान, पूर्वी चम्पारन	1100
34.	श्री सत्य पाल सिंह आर्य, पंचकुला	1100	79.	भेड़िहारी आर्य समाज, नेपाल	6816
35.	श्रीमती सुमन आर्य, फैजाबाद अयोध्या	5000	80.	श्री राम चन्द्र शास्त्री, रोहतक	1100
36.	श्रीमती उर्मिला आर्य, फैजाबाद, अयोध्या	1100	81.	श्री योगानन्द सरस्वती,	1111
37.	श्रीमती प्रेम लता, भिवानी (हरि.)	500	82.	क्षेत्रीय आर्य समाज, बुलन्द शहर (उ.प्र.)	5100
38.	श्री चिंतामणि वर्मा,	6875	83.	श्री किरण पाठक, उपाध्यक्ष नेपाल आर्य समाज	687
39.	श्रीमती सत्यवती देवी आर्य, अलीगढ़	11111	84.	श्री मीरा तिवारी	2512
40.	श्रीमती उर्मिल यादव, गुरुग्राम हरियाणा	2500	85.	श्री ज्ञान कुमार तात्याराव आर्य, लातूर	2500
41.	श्री ध्रुव प्रसाद, (राजस्थान)	1100	86.	श्री राम प्रसाद वेदालंकार, हरिद्वार	11000
42.	श्री राजश्री वीटे, हॉलैंड	7100	87.	आर्य समाज औरंगाबाद, मितरोल,पलवल	1100
43.	श्री राम मुनी आर्य, रोहतक (हरियाणा)	3187	88.	श्री सुरेन्द्र आर्य, हरियाणा	1100
44.	श्रीमती लालमतो देवी, नेपाल	1005	89.	श्रीमती रेनू सहगल, दिल्ली	10000
45.	श्री छटू शाह, नेपाल	312			

- क्रमशः

उपरोक्त सूची महासम्मेलन के अवसर पर भूमि क्रय हेतु सहयोग प्रदान करने वाले महानुभावों की है। इस मद में दान देने वाले शेष दानदाताओं तथा महासम्मेलन के अवसर पर घोषणा करने वाले महानुभावों की सूची इसी क्रम में प्रकाशित की जाती रहेगी। अतः समस्त आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं, दानी महानुभावों एवं जनसाधारण से निवेदन है कि अधिकाधिक सहयोग राशि प्रदान करके नेपाल में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का मार्ग प्रशस्त करें और नेपाल में सशक्त आर्यसमाज के निर्माण में सहयोगी बनें। कृपया अपनी सहयोग राशि '**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**' के माध्यम से सभा कार्यालय - '**15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**' के पते पर भेजें।

- प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्व. सभा

आर्यसमाज हनुमान रोड में वैदिक सत्संग का समापन

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के 94वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित वैदिक सत्संग कार्यक्रम समापन 13 नवम्बर, 2016 किया जाएगा। इस अवसर पर विभिन्न विषयों पर कई वैदिक विद्वानों के प्रवचन होंगे। आप सब अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर धर्मलाभ अर्जित करें। *- दयानन्द यादव, मन्त्री*

41वां वार्षिकोत्सव पर वेदकथा का आयोजन

आर्यसमाज एल ब्लाक आनन्द विहार, हरि नगर, नई दिल्ली के 41वां वार्षिकोत्सव के अवसर पर यज्ञ एवं वेद कथा का आयोजन 16 से 20 नवम्बर तक किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य महिला सम्मेलन, बाल/बालिका प्रतियोगिताएं तथा आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर भजन डॉ. कैलाश कर्मठ जी तथा प्रवचन डॉ. जयेन्द्र शास्त्री के होंगे। *-महेन्द्र सिंह, मत्री*

रजत जयन्ती स्थापना दिवस समारोह

आर्य समाज दिलशाद गार्डन अपना रजत जयन्ती स्थापना दिवस समारोह दिनांक 17 से 20 नवम्बर 2016 के मध्य आयोजित कर रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल चेयरमैन एम.डी.एच. ग्रुप एवं विशिष्ट अतिथि श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री विनय आर्य महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा व श्री अभिमन्यु चावला मंत्री केन्द्रीय सभा होंगे। *- अरुणा मुखी, मंत्री*

बाल शिविर एवं वेद प्रचार सप्ताह का आयोजित

आर्य समाज विवेक विहार के तत्त्वावधान में 15 व 16 अक्टूबर 2016 को बाल शिविर का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 87 बालक/बालिकाओं ने भाग लिया। शिविर का संचालन श्रीमती मनोरमा चौधरी जी ने किया तथा आर्य समाज विवेक विहार द्वारा 17 से 23 अक्टूबर 2016 के मध्य वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन भी किया जिसमें डॉ. जयेन्द्र कुमार जी वक्ता व भजनोपदेशक श्री दिनेश दत्त जी ने अपने भजनों से समा बांध दी। *- उषाकिरण आर्य, प्रधान*

MDH
हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
(5,10, 20 किलो की पैकिंग)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

आवश्यकता है

श्री देवतीर्थ गंगा गुरुकुल आश्रम बृजघाट, गढ़ मुक्तेश्वर हापुड़ (उ.प्र.)में संस्कृत व्याकरण, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, कम्प्यूटर के अध्यापकों की आवश्यकता है। यथोचित सेवाशुल्क, आवास, भोजन की समुचित व्यवस्था प्रदान की जाएगी। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें -

-आचार्य विकास तिवारी
मो. 9968059239

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें- *- सत्यप्रकाश आर्य 9650183335*

लिए
पढ़ें

सोमवार 7 नवम्बर, 2016 से रविवार 13 नवम्बर, 2016
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110 0 01

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 10/11 नवम्बर, 2016
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 9 नवम्बर 2016

पंजीकरण संख्या : ॥ ओ३म्॥ रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वाधान में

आर्य परिवार युवक–युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15-हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टैलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959
Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

1. युवक/युवती का नाम :........................ गोत्र........................
2. जन्मतिथि:........................ स्थान : ....
3. रंग........................ वजन .... लम्बाई ....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : ....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता ....

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रूप से लगाएं।"

: पारिवारिक :

6. पिता/सरंक्षक का नाम .... व्यवसाय: .... मासिक आय........................
7. पूरा पता:........................
   दूरभाष :........................ मोबा.:........................ ईमेल :........................
8. मकान निजी/किराये का है........................
9. माता का नाम :........................ शिक्षा :........................ व्यवसाय : ....
10. भाई – अविवाहित........................विवाहित........................। बहिन– अविवाहित........................विवाहित........................।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? ....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) ....
13. युवक/युवती यदि इनमें से होतो सही पर (✓) लगाएं : विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग : ☐
14. विशेषः किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में लिखें: ....

दिनांक : .... पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

नई दिल्ली 15 जनवरी 2017

परिचय सम्मेलन 15 जनवरी 2017, रविवार, आर्य समाज, अशोक विहार, फेज 1, F-5 नई दिल्ली-110052 में आयोजित किया जाएगा। विशेष जानकारी हेतु राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चढडा (09414187428) अथवा दिल्ली के संयोजक श्री एस. पी. सिंह (09540040324) श्री प्रेम सचदेवा, प्रधान आर्य समाज अशोक विहार (09811122320), श्री जीवन लाल आर्य - मंत्री- अशोक विहार (09718965775) से सम्पर्क करें।

नोट : 1. विकलांग युवक–युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
2. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी पूर्ण सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नही होगी।
3. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। **फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।** यह फार्म ऑनलाइन भी भर सकते है लिंक matrimony.thearyasamaj.org
4. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रू. 300/– (तीन सौ रूपये) का डिमांड ड्राफ्ट प्रति सम्मेलन के हिसाब से संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 15 दिन पूर्व भेज दे, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका मे प्रकाशित किया जा सके।
5. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लेकर लावें। कॉलम नं. 11 भरे बिना फार्म स्वीकार्य नहीं होगा।

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रतिष्ठा में,

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के

90वें बलिदान दिवस पर भव्य शोभायात्रा एवं जनसभा

रविवार 25 दिसम्बर, 2016

यज्ञ : प्रातः 8 बजे : शोभायात्रा प्रारम्भ : प्रातः 10 बजे बलिदान भवन से

विशाल सार्वजनिक सभा

रामलीला मैदान, नई दिल्ली : दोपहर : 1 बजे से सायं 4 बजे

आर्यजन अभी से तैयारी आरम्भ करें और अधिकाधिक संख्या में स्वामी जी को श्रद्धांजलि देने हेतु पहुंचें। निवेदक :- आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

विराट जनजातीय वैदिक महासम्मेलन

19–20–21 नवम्बर : आसाम–नागालैंड

समस्त आर्य महानुभावों से निवेदन है कि जो आर्यजन किसी भी प्रकार से सम्मेलन में पहुंच रहे हैं कृपया पूर्व सूचना अवश्य दें, ताकि भोजन–आवास व्यवस्थाओं को बनाए रखने में असुविधा न हो।

– जोगेन्द्र खट्टर, महासचिव, 9810040982

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2017 कैलेण्डर प्रकाशित

कैलेण्डर

वर्ष 2017

मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/– सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें–

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष : 011–23360150, 09540040339

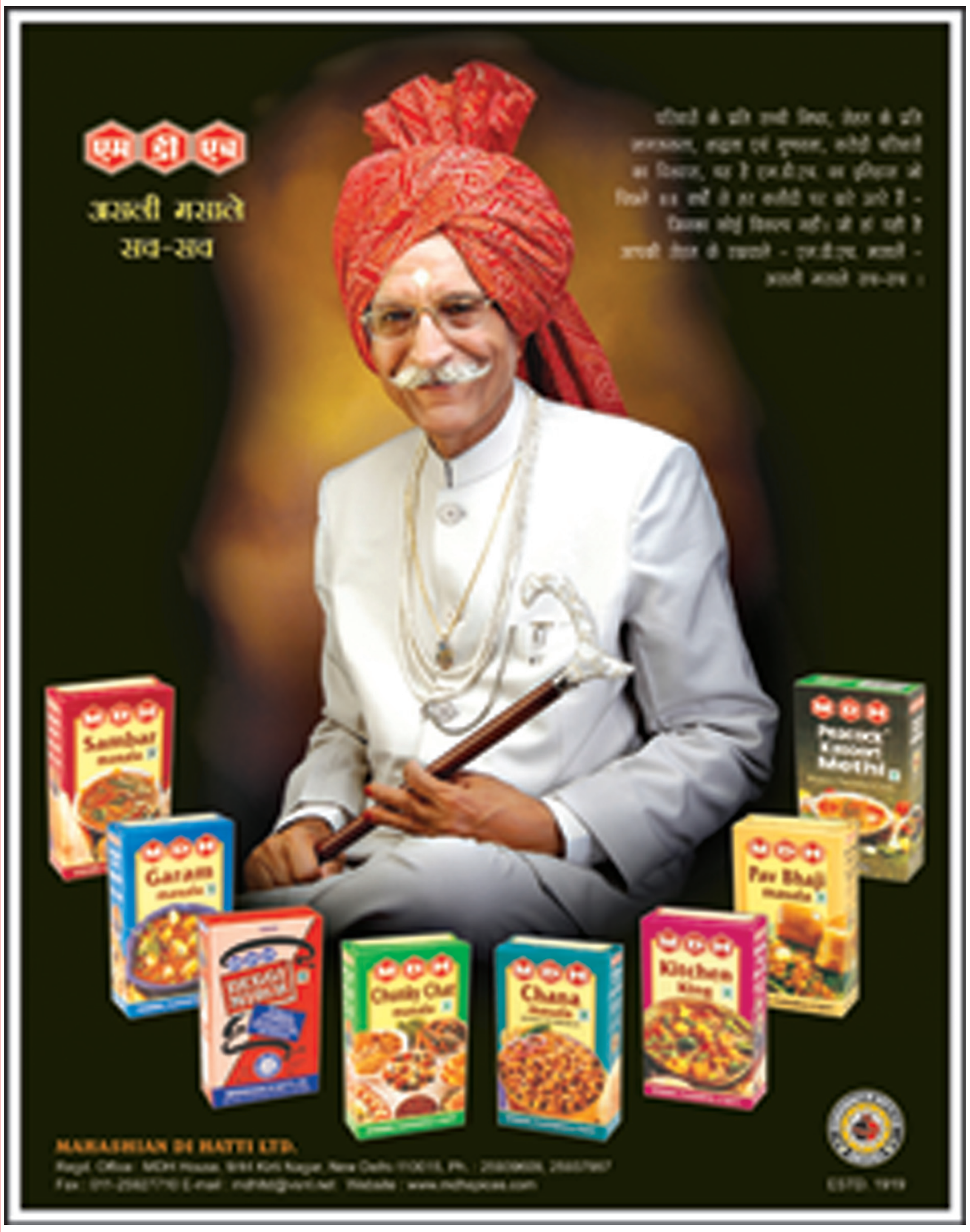

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नारायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह